Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Article

बुन्देलखण्ड केशरी दीवान शत्रुघन सिंह भारत में ग्रामदान गंगा के भागीरथ एवं समग्र क्रांति के उपासक

पुष्पेन्द्र कुमार सोनी *

पी एच डी, शोधार्थी, इतिहास, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *पुष्पेन्द्र कुमार सोनी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18507726

सारांश

बुन्देलखण्ड में स्वतन्त्रता संग्राम के लिए अपना सब कुछ लुटा देने वालो में कमी नहीं थी । इन्हीं में से एक थे- ग्राम दान गंगा के भागीरथ बुन्देलखण्ड केसरी क्रांतिवीर दीवान शत्रुघन सिंह जी !

सन् *1857* के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के बाद देश में स्वतन्त्रता के लिये लिए आन्दोलन चलता रहा । महात्मा गांधी के कुशल नेतृत्व में देश में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आन्दोलन चलाया गया । इन आन्दोलनों में बुन्देलखण्डवासियों ने बढ़ चढ कर हिस्सा लिया । इन्ही में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी बुन्देलखण्ड केसरी दीवान शत्रुघन सिंह तथा उनकी पत्नी रानी राजेन्द्र कुमारी की प्रमुख भूमिका रही । जो देश के स्वतन्त्रता संग्राम में अपना योगदान देकर अमर हो गये ! एक छोटा सा गांव मंगरौठ जो बुन्देलखण्ड में उत्तर प्रदेश राज्य के हमीरपुर जिलें में सरीला तहसील के अन्तर्गत आता हैं । आज भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है । यह भारत का सबसे पहला गांव था जो बिनोवा भावे को ग्राम दान में दिया गया । यह सुझाव मंगरौठ गांव के जमीदार दीवान शत्रुघन सिंह ने विनोबा भावे को ग्राम दान में दिया । दिवान साहब ने अपनी मालकीयत का विसर्जन किया और यह कहते हुए अमर हो गये ।

"सबै भूमि गोपाल की "

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 20-12-2025
- **Accepted:** 28-01-2025
- **Published:** 06-02-2026
- **MRR:**4(2); 2026: 49-51
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

पुष्पेन्द्र कुमार सोनी. बुन्देलखण्ड केशरी दीवान शत्रुघन सिंह भारत में ग्रामदान गंगा के भागीरथ एवं समग्र क्रांति के उपासक. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(2):49-51.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: बुन्देलखण्ड , आन्दोलन , ग्रामदान , गंगा , भागीरथ , हुकूमत , स्वतंत्रता संग्राम ।

© 2026 पुष्पेन्द्र कुमार सोनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

शताब्दियों से यह बुन्देलखण्ड भूमि भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, शिल्पकला, संगीत, स्थापत्य और राजनैतिक दृष्टि से अपना प्रथक अस्तित्व रखती आ रही है । इस खण्ड के हर खण्ड में प्राचीन युग से वर्तमान युग की गुण गरिमा अन्तर्भूत है।

बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा भारत वर्ष के उत्तर प्रदेश राज्य के दक्षिण के भू-भाग पुण्य सलिला यमुना, नर्मदा, चम्बल, बेतवा, धसान, सरिताओं की धाराओं से परिवेष्ठित है । नर्मदा, यमुना, बेतवा, चम्बल वाला यह क्षेत्र सभी कालों में आक्रमणकारियों को चुनौती देता रहा है । इसके बारे में एक लोकोक्ति हैं।

इत यमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टौंस ।
छत्रसाल से लड़न की, रही न काहू हौंस ।।

जंग-ए-आजादी में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी बुन्देलखण्ड केसरी दीवान शत्रुघन सिंह का जन्म 25 दिसम्बर, 1901 में उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले के सरीला तहसील के गाँव मंगरौठ में हुआ था । आजादी के बाद सन्त विनोवा भावे के भूदान आन्दोलन में अपना पूरा गाँव अर्पित कर मंगरौठ को अमरत्व प्रदान करने वाले दीवान साहब बचपन से ही समानता और समाजवाद के पक्षधर थे । उनके पिता दीवान सुदर्शन सिंह भी सच्चरित दानी और सत्यनिष्ठ जमीदार थे दीवान शत्रुघन सिंह का विवाह 13 वर्ष की अल्पायु में ही गाजीपुर (फतेहपुर उ०प्र०) के धनाढ्य जमीदार शिवराज सिंह की पुत्री कौशल्या देवी से हुआ था, जो बाद में बुन्देलखण्ड में रानी राजेन्द्र कुमारी के नाम से प्रसिद्ध हुई । दीवान साहब के पिता उनके जन्म से पूर्व ही दिवंगत हो चुके थे इसलिए उनका पालन पोषण स्टेट के मुख्तार मलेहटा निवासी गुरुबख्स सिंह द्वारा हुआ। गुरुबख्स सिंह उनके वंशज भी थे । श्री गुरुबख्स सिंह ने ही इनका नाम शत्रुघन सिंह रखा ।

मौलवी मुनब्बर एवं उस्ताद वासित अली ने उन्हें उर्दू की शिक्षा दी । उन दिनों राठ में बनारस के श्री किफायत अली साहब तहसीलदार थे उनके प्रयत्न से पंचम जार्ज के राज्याभिषेक की स्मृति में राठ में जार्ज कारोनेशन नाम से स्कूल खोला गया । इस स्कूल में उन्होंने कक्षा 6 तक अध्ययन किया । तत्पश्चात दो वर्ष उरई में अध्ययन किया । यह उनका औपचारिक विद्यालीय अध्ययन था । उनकी माँ सुभद्रा देवी एक अत्यन्त धार्मिक प्रवत्ति की महिला थी। वे इन्हें रामायण, महाभारत, प्रहलाद एवं हरदौल आदि की कथाएं सुनाती और मनपसन्द दोहा, चौपाई, एवं श्लोकों को कंठस्थ कराती थी । कालान्तर में दीवान साहब ने इनका और गहरा अध्ययन किया, आत्मसात किया ।

दीवान शत्रुघन सिंह ने सर्वप्रथम "कुरीति निवारिणी सभा" का गठन समाज में अश्लील गाली गलौंच एवं कुरीतियों को रोकने के लिए किया । तत्पश्चात अपने ही गांव के दलितों को अंग्रेजी हुकूमत की पुलिस द्वारा व्यर्थ में सताये जाने के कारण उन्होंने अंग्रेज़ी साम्राज्य को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया ।

इसी उद्देश्य पूर्ति के लिए लिये उन्होंने चुनिंदा देशभक्त नवयुवकों की क्रांतिकारी संस्था "भारतीय चन्द्रहास" का गठन किया । इस संस्था की बैठक मंगरौठ गाँव के भीषण जंगल में होती थी ।

दीवान साहब ने ऐसे ही देशभर की अन्य संस्थाओं से सम्पर्क किया और कुछ दिनों में मंगरौठ क्रांतिकारियों का आश्रय स्थल बन गया । जहाँ शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे वीर क्रांतिकारियों ने प्रवास किया ।

कुछ समय पश्चात दीवान साहब का सम्पर्क एक महर्षि पंडित लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री से हुआ। वह सुनियोजित योजना के अन्तर्गत खादी तहसील राठ लाते और दीवान साहब के माध्यम से बेचते । खादी तो बिकती ही थी लेकिन वह गाँधीवाद अधिक बेचते थे । दीवान साहव बचपन से सशक्त क्रांतिकारी विचारधारा के थे किन्तु बाद में वह गांधी की आंधी में अहिंसात्मक क्रांति की दिशा की ओर मुड गये वह सपत्नीक गांधी जी के सभी आन्दोलनों में शामिल हुए । 1914 ई० में प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो चुका था। उसके बाद अंग्रेजी सरकार ने भारत में सभी जमीदारों की बैठक बुलाई । राठ तहसील में 1916 ई० में अंग्रेज कलेक्टर की सदारद में सभी जमीदारों की बैठक बुलाई गई । सभी जमीदार अपना नाम पुकारे जाने पर अधिक से अधिक चंदा देने का ऐलान करते थे । लेकिन दीवान शत्रुघन सिंह ने युद्ध फण्ड के लिये चंदा देने से मना कर दिया । यह एक ऐसी ऐतिहासिक घटना थी जो उनके देश प्रेम और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ बगावत का प्रथम पायदान साबित हुई । सन् 1921 के सत्याग्रह में उन्हें गिरफ्तार किया गया और हमीरपुर कारागार में बन्द कर दिया गया । जनपद हमीरपुर का यह प्रथम राजनैतिक अभियोग था । इस मामले की सुनवाई हमीरपुर की अदालत में हुई तो सम्पूर्ण जनपद से भारी जन सैलाव अदालत के भीतर और बाहर उमड पड़ा था । उन्हें डेढ़ वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई ।

कुछ दिनों बाद दीवान शत्रुघन सिंह को हमीरपुर कारागार से लखनऊ की जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया । लखनऊ की कारागार में उस समय पंडित जवाहर लाल नेहरू सहित लगभग 52 नेता इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) मे बन्दी होकर आये थे । वर्ष 1922 में खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण दीवान शत्रुघन सिंह को पुनः गिरफ्तार कर लिया गया और हमीरपुर तथा तथा लखनऊ जेल में रखा गया । सन् 1924 तक दीवान शत्रुघन सिंह की समूचे बुदेलखण्ड में लोकप्रियता बढ़ गयी, जिसके चलते उन्हे जिला परिषद का अध्यक्ष चुना गया । सन् 1926 में वे पुनः जिला परिषद के अध्यक्ष पद के लिए चुने गये । सन् 1930 में गांधी जी ने नमक सत्याग्रह किया , तभी नमक सत्याग्रह आन्दोलन में राठ के बाजार में दीवान साहब ने नमक कानून का विरोध किया उन्हें पुनः गिरफ्तार होना पड़ा, अब की बार उन्हें हमीरपुर, उन्नाव तथा लखनऊ की कारागारों में रखा गया । उसी समय उनकी पत्नी रानी राजेन्द्र कुमारी पर्दा प्रथा तोड कर स्वतन्त्रता के महासमर मे कूद पड़ी । रानी राजेन्द्र कुमारी ने सन् उसी 1930 में सत्याग्रह कर कुलपहाड़ थाने (जिला महोबा उ०प्र०) में तिरंगा फहराया उनके साथ उनकी सहयोगी स्वतंत्रता सेनानी उर्मिला देवी कोष्टा भी थी । ब्रिटिश सरकार ने तब रानी साहिबा को उनके अल्प व्यस्क पुत्र वीर प्रताप सिंह सहित गिरफ्तार कर लिया था सन् 1932-33 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन" में भाग लेने पर 'दीवान साहब को पुनः गिरफ्तार किया गया । फिर सन् 1940-41 में वह व्यक्तिगत सत्याग्रह में गिरफ्तार हुए और सेन्ट्रल जेल चुनार में सजा काटी । इतनी गिरफ्तारियों से इस जाबांज सेनानी का हौसला बुलन्दियों पर पहुंच चुका था । इसके बाद जब वह महात्मा गांधी के आवाहन पर सन् 1942 में भारत छोडो आन्दोलन में गिरफ्तार हुए तो उन्हें हमीरपुर तथा फतेहगढ़ की जेलों में सजा काटनी पड़ी ।

© 2026 पुष्पेन्द्र कुमार सोनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

देश की आजादी के बाद दीवान साहब के हृदय में देश के लिए कुछ करने की कसक बाकी रह गयी थी । इस कसक को पूरा करने के लिए उन्हें सन् 1952 में मौका मिला जब विनोबा भावे के साथ भूदान रूपी गंगा बहती हुई 24 मई 1952 को बुन्देलखण्ड के हमीरपुर जिले में बेतवा नदी के किनारे पहुंची । दीवान साहब ने सन्त विनोबा भावे के चरणों मे सारा का सारा मँगरौठ गाँव अर्पित कर दिया ।

उस समय तक देश मे भूमि का दान तो मिल चुका था,किन्तु इस तरह सारा का सारा ग्राम दान कहीं नहीं मिला था । किसी भी गाँव में तब तक अपने स्वामित्व का सोलह आना विसर्जन नहीं किया था । दीवान साहब का मानना था कि आर्थिक स्वतन्त्रता के अभाव में राजनीतिक स्वतन्त्रता निर्मूल्य है ।

दूसरों के दुख-दर्द को अपने हृदय में समेटने वाले बुन्देलखण्ड के महापुरुष दीवान शत्रुघन सिंह 4 दिसम्बर 1975 को पंचतत्व में विलीन हो गये। बाद में उनकी सहचारिणी ने भी पति वियोग में 5 दिसम्बर 1975 को सती होकर इस संसार से बिदा ले ली । भारत सरकार द्वारा दीवान साहब की फोटो के साथ एक डाक टिकिट भी जारी किया गया । बुन्देलखण्डवासी स्वतंत्रता संग्राम की इन महान विभूती को प्रतिवर्ष 25 दिसम्बर को अपने सच्चे हदय से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं ।

निष्कर्ष

बुन्देलखण्ड केसरी दीवान शत्रुघन सिंह के ऐतिहासिक परिचय से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि दीवान शत्रुघन सिंह एक महान सर्वोदयी, एक समग्र कांति के उपासक थे। उन्होने उ०प्र० के हमीरपुर जिले की राठ तहसील में श्री गांधी राष्ट्रीय विद्यालय इन्टर कालेज की स्थापना की, गाजीपुर (फतेहपुर उ०प्र०) मे इन्टर कालेज की स्थापना की । वह अनेक संगठनो के संचालक तथा अध्यक्ष रहे, किंतु कहीं भी अपने नाम का शिलालेख नही लगवाया । इस प्रकार दिवान शत्रुघन सिंह का देश के स्वतन्त्रता संग्राम में तथा भूदान आन्दोलन को फलीभूत करने में अतुलनीय योगदान रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तिवारी गोरेलाल. बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास. वाराणसी: नगर प्रचारिणी सभा; 1990।
2. त्रिपाठी भागीरथ प्रसाद. बुंदेलखंड की प्राचीनता (वैज्ञानिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक अध्ययन). वाराणसी: अनुशीलन प्रकाशक; 1965।
3. श्रीवास्तव बीके. बुंदेलखंड का इतिहास (1531–1857 ई.). नई दिल्ली: डी. के. प्रिंट प्रा. लि.; 2019।
4. दिन भवानी. वैभव बेतवा धार. कानपुर: साहित्य प्रकाशन; 1998।
5. दिन भवानी. समर गाथा. महोबा: बसंत प्रकाशन; 1995।
6. राठवी जमील. राठ स्मारिका (विशेषांक). राठ: बज़्म-ए-तामीर सांस्कृतिक समिति; 2013।
7. बघेल संग्राम सिंह. बुंदेलखंड गांधी दीवान शत्रुघ्न सिंह. फतेहपुर (उ.प्र.): जनता इंटर कॉलेज; 1973।
8. भट्टाचार्य एसपी, संपादक. स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक (संक्षिप्त परिचय). झाँसी: सूचना विभाग, झाँसी मंडल, उत्तर प्रदेश; 1963।
9. अर्चना स्वर्ण जयंती विशेषांक (2002–2003). राठ (हमीरपुर): श्री गांधी राष्ट्रीय विद्यालय इंटर कॉलेज; 2003।
10. बादल शास्त्री श्याम सुंदर, संपादक. दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनंदन ग्रंथ. राठ (हमीरपुर): श्री गांधी राष्ट्रीय विद्यालय इंटर कॉलेज; 1960।
11. प्रजापति शिव बालक, संकलनकर्ता. हमीरपुर जनपद का आदर्श भूगोल. भरुआ सुमेरपुर (हमीरपुर): नारायण बुक स्टॉल; वर्ष अप्रकाशित।
12. चौधरी मनमोहन. जनता का राज. नई दिल्ली: केंद्रीय गाथा स्मारक निधि; 1966।
13. बुंदेलखंड: इतिहास एवं विरासत. लखनऊ: पर्यटन निदेशालय; 2025।
14. नारायण गदाधर. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास (1857–1947). वाराणसी: हिंदी प्रचारक संस्थान; 1989।
15. सिंह धनपत. त्यागमूर्ति स्वामी ब्रह्मानंद: जीवन दर्शन एवं स्वरचित तरंगिणी. छतरपुर (म.प्र.): आकृति क्रिएशन; 2000।
16. राठ जूनियर चैंबर. महान क्रांतिकारी पंडित परमानंद (स्मारिका). नई दिल्ली: जे.सी.आई. इंडिया; 1998।
17. जिला गजेटियर: यूनाइटेड प्रोविंसेज़—हमीरपुर. नई दिल्ली: भारत सरकार; 1909।
18. अग्निहोत्री एएन. हमीरपुर. राठ (हमीरपुर): महाराज लक्ष्मीबाई शिक्षा संस्थान; 2000।
19. बादल राजेश. क्रांतिदूत पंडित परमानंद. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास; 2023।
20. जिला गजेटियर: हमीरपुर. लखनऊ: उत्तर प्रदेश सरकार; 1988।
21. जिला गजेटियर: हमीरपुर. लखनऊ: उत्तर प्रदेश सरकार; 2024।
22. जिला पर्यटन एवं संस्कृति परिषद. संकल्प. हमीरपुर: उत्तर प्रदेश सरकार; वर्ष अप्रकाशित।
23. चन्द्र विपिन. आजादी के बाद का भारत. दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय; 2014।
24. चन्द्र विपिन. आधुनिक भारत का इतिहास. नई दिल्ली: ओरियंट ब्लैकस्वान; 2018।
25. चन्द्र विपिन. स्वतंत्रता संग्राम. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया; 1972।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

पुष्पेन्द्र कुमार सोनी महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, छतरपुर (मध्य प्रदेश) में इतिहास विषय के पी-एच.डी. शोधार्थी हैं। उनकी शोध रुचियाँ क्षेत्रीय इतिहास, बुंदेलखंड अध्ययन तथा भारतीय ऐतिहासिक परंपराओं पर केंद्रित हैं। वे अकादमिक लेखन, शोधकार्य और इतिहास के गहन अध्ययन में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

© 2026 पुष्पेन्द्र कुमार सोनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/